हज़रत इमाम हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की करामतें

करामात का सबूत – कुरान करीम व हदीस पाक की रोशनी में

नबियों व रसूलों के मोअजेज़ात तथा अहले बैत व सहाबा और ऑलिया अल्लाह व सालिहीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की करामतों के सत्य होने का वर्णन क़ुरान पाक तथा हदीसों में उपलब्ध है। संप्रदाय के विद्वानों का इस पर इसलाम के आरम्भ से निश्चय साबित है।

अल्लाह तआला के वह उच्च व पावन व प्रिय बन्दे जो अपने जीवन का पर पल अल्लाह तआला की याद के लिए बिता देते हैं। नफ्स व स्वार्थ की इच्छा व कामना को समाप्त करते हैं। सांसारिक लुभाव व आकर्षण एवं मोह को छोड़ कर के अपनी सर्व शक्ति धर्म के प्रचार व उत्पथि में बिताया करते हैं।

ऐसे ऑलिया व पुण्यात्मा का सम्मान व प्रतिष्ठा का स्मरण क़ुरान में अनेक स्थान पर किया गया। इन उच्च ज़ात के लिए परलोक व आखिरत में उच्च स्थान, मध्य स्तर हैं एवं वह वरदान से संबोधित किए जाएंगे। किन्तु संसार में भी अल्लाह तआ़ाला इन के सम्मान व प्रतिभा के प्रकट के लिए विशेषता प्रदान करता है। अल्लाह तआ़ाला का आदेश हैः-

भाषांतरः- एवं निस्संदेह हम ने ज़बूर में अनुदेश के बाद ये लिख दिया निश्चय धरती के उत्तराधिकारी मेरे नेक बन्दे होंगे।

(सुरह अल अंबियाः 31:105)

इस आयत के विस्तार में विवरण के विशेषज्ञ ने लिखा है के धरती से तात्पर्य जन्नत की धरती है। एवं कुछ विशेषज्ञ ने फरमाया के इस से संसार की धरती तात्परय है तथा अ़ल्लामा इब्न कसीर ने इस आयत के प्रति में लिखा है के ऑलिया व पुण्यात्मा, संसार व परलोक प्रत्येक दो की धरती के वारिस होते हैः

भाषांतरः- अल्लाह तआ़ाला इन चीज़ों से संबंध से वर्णन कर रहा है जिस का इस ने अपने नेक बन्दों के लिए स्वयं एवं पूर्णतः निर्णय कर दिया है के संसार व परलोक में इन के लिए कृपा है तथा संसार व परलोक में धरती इन की विरासत है।

(तफसीर इब्न कसीर, जिल्द 05, पः 384, सुरह अल अंबियाः 31:105)

जब अल्लाह तआ़ाला ने ऑलिया अल्लाह को धरती का उत्तराधिकारी बना दिया तो इन लोग को अपने विशेष कृपा व करुणा से अधिकारी एवं स्वत्वधारी बना देता है। फिर इन से रीत के विरुद्ध कार्य प्रकट होते हैं। जिन्हें "करामत" कहा जाता है।

अहले सुन्नत व जमात का ऐक्य अखीदा व विश्वास है के ऑलिया अल्लाह की करामात सत्य हैं। जैसा के अखीदे के विद्या में पढ़ाई जाने वाली दर्स-निज़ामी की नामवर पुस्तक "शरह अखाइ़द नसफी" के पः 144 में वर्णन हैः-

भाषांतरः- ऑलिया किराम की करामात सत्य है।

(शरह अखाइ़द नसफी, पः 144)

मोअ़जज़ा एवं करामत के बीच अंतर

मोअ़जज़ा एवं करामत के बीच बुनियादी अंतर ये है के मोअ़जज़ा से तात्पर्य वह रीत व आदत के विरुद्ध कर्म है जो किसी बनी सि इन की नबूवत की सत्यता की दलील के रूप से प्रकट हुई हो। एवं करामत इस आदत के विरुद्ध कर्म को कहा जाता है जो नबूवत के दावे के बिना किसी धर्मनिष्ठ व दृष्ठा मोमिन से प्रकट होता है।

एवं यदि किसी ग़ैर-मुसलिम तथा निष्क्रिय व बदअ़मल से कोई आदत के विरुद्ध घटना स्पष्ट हो जाए तो इस इस्तेदराज कहा जाता है। जैसा के शरह अखाइ़द नसफी में हैः

वली की करामत, नबी की प्रतिभा पर साक्ष्य करती है-

आदत व रीत के विरुद्ध पेश आने वाले ऑलिया अल्लाह के घटना व करामतें वास्तव में नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि वसल्लम की उत्तमता व विशिष्टता का केन्द्र हुआ करती हैं अर्थात इमाम नबहानी की पुस्तक जामेअ़ करामात उल ऑलिया के प्रस्तावना में हज़रत शैख शहाब उद्दीन सुहरवरदी रहमतुल्लाहि अलैह व्याख्या करते हैः

भाषांतरः- आरिफ बिल्लाह इमाम शहाब उद्दीन सुहरवरदी रहमतुल्लाहि अलैह से वर्णित है, आप ने फरमायाः निश्चय ऑलिया अल्लाह से अनेक करामात का प्रकट

होता है। जैसेः हवा में हाथिफ ग़ैबी (पवित्र आवाज) को सुना करते हैं। एवं बातिन से आवाज़ सुनते एवं पहुंचाते हैं। तथा धरती इन के लिए समेट दी जाती है। तथा वह रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पालन व अनुगामी की बरकत से घटना घटित होने से पूर्व ही इन्हें जान लेते हैं। एवं ऑलिया अल्लाह की करामात वास्तव में अंबिया किराम अलैहिस सलाम के मोअजज़ात का परिणति एवं उपहात होता है।

(मुखद्दिमा जामेअ करामात उल ऑलिया, पः 36)

करामतों की स्पष्ट होने का कारण

अल्लाह तआला सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अंतिम पैगम्बर बनाया। अब कोई नबी या रसूल नहीं आएंगे, क़ियामत तक जितने लोग आएंगे। सब सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की पावन जात पर इमान लाने के मुहताज होंगे।

स्पष्ट है जो लोग अभी इसलाम की सीमा में प्रवेश नही हुए इन के लिए ऐसे रीत व आदत के विरुद्ध का पेश आना अवश्य है जो इन्हें इसलाम की ओर मोह करें एवं

इमान लाने पर आकर्षित करें। इसी कारण से इस संप्रदाय व समुदाय के ऑलिया अल्लाह की करामतें अन्य उम्मतों के ऑलिया किराम की करामतों से अधिक हैं।

जैसा के अ़ल्लामा यूसुफ बिन इस्माइ़ल नबहानी रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैः

भाषांतरः- नबी रहमत सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की संप्रदाय व उम्मत के ऑलिया किराम की करामतें अधिक होने की हिकमत अल्लाह तआ़ला सर्वश्रेष्ठ जानता है। ये है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन जीवन में एवं आप के पवित्र देहान्त के बाद आप के मोअ़जज़ात की अधिकता के द्वारा सम्पूर्ण पैगम्बरों पर आप की सरदारी का प्रदर्शन है। क्यों के आप अंतिम पैगम्बर हैं एवं अल्लाह तआ़ला के प्रिय व महबूब हैं। तथा क़ियामत तक आप का धर्म चलता रहेगा, इसी कारण से अवश्य है के धर्म की सत्यता व सच्चाई के दलील भी प्रत्येक ज़माने में प्रकट होते रहें। एवं इन मज़बूत दलीलों में आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की उम्मत व संप्रदाय के ऑलिया की करामतें हैं, जो वास्तव में आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ही के मोअ़जज़ात का फैज़ान है।

(मुखद्दिमा जामेअ़ करामात उल ऑलिया, पः 36)

ऑलिया अल्लाह के करामत का प्रदर्शन क्यों होता है? इस के साधन व अस्थित्व एवं लाभ पर रोशनी ड़ालते हे अल्लामा इब्न ख़ैयिम ने लिखा है।

करामत का सबूत- क़ुरान करीम से

आदत के अतिरिक्त कार्य व कर्म का वर्णन क़ुरान पाक की आयतों में उपलब्ध है। अर्थात सुरह आले-इमरान में हज़रत मरयम अलैहिस सलाम की करामत, सुरह कहफ में असहाबे-कहफ की करामत तथा हज़रत क़िस्र अलैहिस सलाम की करामत, सुरह मरयम में हज़रत मरयम अलैहस सलाम की करामत तथा सुरह नम्ल में हजज सुलैमान अलैहिस सलाम के उम्मती हज़रत आसिफ बिन बरख़िया रहमतुल्लाहि अलैह की करामत का वर्णन है।

सूखे पेड़ से ताज़ा खजूर गिरने लगे

जब हज़रत ईसा अलैहिस सलाम के जन्म का अवसर आया तो आप की आदरणीय माँ हज़रत मरयम अलैहस सलाम एक पेड़ के तने के पास आएँ। जो सूखा था, उस पर खजूर ना थे, अल्लाह तआला नमाज़ फरमायाः

भाषांतरः और खूजर के वृक्ष के तने को अपनी ओर हिलाओ, ये तुम पर ताज़ा और पक्के खजूर गिरा देगा।

(सुरह मरयमः 19:25)

उपर्युक्त वर्णन आयत में बताया गया के हज़रत मरयम अलैहस सलाम ने खजूर के वृक्ष को हाथ लगाया तो वे उसी समय तर व ताज़ा खजूर आप की गोद में ड़ालने लगा, स्पष्ट है सूखा हुआ पेड़ तर व ताज़ा होता है तो उस के लिए समय लगता है।

कुछ ही पल में या कुछ घंटों में बेशुमार पेड़ फलदार नहीं होता, सूखा पेड़ हरा-भरा नहीं होता, सूखे हुए पेड़ पर ताज़गी नज़र नहीं आती, सूखे पेड़ का पल भर में ताज़ा एवं फलदार हो जाना, निश्चय अल्लाह तआला की इस प्रिय बन्दी की करामत है।

ग़ैब से बेमौसम फल की आगमन

हज़रत मरयम अलैहस सलाम के पास बंद कमरे में बेमौसम फल व मेवे आया करते थे जबके वहाँ लाने वाला कोई ना होता, जैसा के सुरह आले-इमरान की आयत नः 37 में अल्लाह तआला का आदेश हैः-

जब भी सैय्यदना ज़करिया अलैहिस सलाम, हज़रत मरयम अलैहिस सलाम के पास इबादत के स्थान में प्रवेश होते तो इन के पास खाने की चीज़ें उपस्थित पाते। आप ने फरमायाः अए मरयम! ये चीज़ें तुम्हारे लिए कहाँ से आती हैं? इन्हों ने कहाः (ये रिस्ख) अल्लाह तआला के पास से आता है। निश्चय अल्लाह तआला जिसे चाहता है बेहिसाब रिस्ख प्रदान करता है।

(सुरह आले-इमरानः 03:37)

इस धन्य आयत में करामत की सच्चाई का स्पष्ट सबूत मिलता है के हज़रत मरयम अलैहिस सलाम नबी नहीं थीं बल्कि एक वलिया थी। तथा जब भी हज़रत ज़करिया अलैहिस सलाम आप के पास तशरीफ ले जाते तो दर्शन करते के वहाँ अनेक प्रकार के फल उपस्थित हैं। गरमी के मौसम में सरदी के फल उपस्थित होता तथा सरदी के मौसम में गरमी का फल उपस्थित होता।

इसी प्रकार बिना मौसम के फल का होना एवं ग़ैब (अदृष्ट) से पोषण व जीविका का आना ये हज़रत मरयम अलैहिस सलाम की करामत व चमत्कार है।

असहाबे-कहफ का 309 वर्ष आराम करना

हज़रत सैयदना ईसा अलैहिस सलाम की उम्मत की नेकोकार लोग ने फितने व फसाद से बचने और अपने ईमान की सुरक्षा करने के लिए एक ग़ार व गुफा में पनाह ली एवं 309 वर्ष गुफा ही में निवास करते रहे, जैसा के सुरह कहफ की आयत नः 25 में अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः- और वे (कहफ के लोग) अपनी गुफा में 300 वर्ष ठहरे रहे तथा उन्हों ने इस पर 9 वर्ष उससे अधिक। आप फरमा दीजिए अल्लाह तआ़ला सर्वश्रेष्ठ जानता है के वह कितना समय ठहर रहे।

(सुरह अल कहफः 18:25,26)

यहाँ कहफ के लोग का वर्णन किया जा रहा है के अल्लाह तआ़ला वह नेक व पुण्यात्मा बन्दे 309 वर्ष तक गुफा में रहे। इन के शरीर पर कुछ अंतर व बदलाव ना आया। इस लम्बे समय तक ना उन्हों ने कुछ खाया ना पिया, मानव शरीर की आवश्यकता व अपेक्षा खाना-पीना है, कोई व्यक्ति बिना खाय-पिय सालों तक जीना तो दूर की बात कुछ सप्ताह या महीने नहीं गुज़ार सकता। किन्तु कहफ के लोगों ने 309 वर्ष का लम्बा समय समय बिताया।

ये अल्लाह तआ़ाला की विशाल प्रकृति से कह्फ के लोग की करामत है के उन्हों ने 309 वर्ष का लम्बा समय गुफा में बिना कुछ खाय-पीय बिताया, इन के शरीर सुरक्षित रहे। तथा इन के दर पर रहने वाला कुत्ता भी सुरक्षित रहा।

सौर-मण्डल में रूपान्तर – असहाबे-कह्फ की करामत

ये एक सच्चाई है के सूर्य अपने एक निर्धारित व्यवस्था के प्रति गर्दिश व घूर्णन करता है। निकलने तथा डूबने के व्यवस्था व पद्धति में ना एक पल के लिए देर करता है तथा ना एक सेन्टीमीटर या एक मिलीमीटर उदित होता है।

ये प्रकृति व्यवस्था है। इस के बावजूद अल्लाह तआ़ाला ने कह्फ के लोग को ये करामत व चमत्कार व उच्चता प्रदान की उन की राहत व आराम के लिए सौर-मण्डल में बदलाव स्पष्ट हुआ।

जैसा के सुरह कह्फ की आयत नः 17 में अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः- तथा आप सूर्य को उसके उदित होते समय देखेंगे के जब वह निकता है तो इन के गुफा से दाहिनी ओर हट कर गुज़रता है तथा जब वह डूबता है तो बायें

ओर करताता हुआ डूबता है तथा वह (कह्फ के लोग) गुफा के विस्तृत भाग में हैं। ये अल्लाह तआ़ला की निशानियों में से है।

(सुरह अल कह्फः 18:17)

इस धन्य आयत में कह्फ के लोग की एक और करामत का वर्णन है के जितना समय उन्हों ने गुफा में गुज़ारा इतने समय तक सूर्य ने अपनी रोशन व दीप्तिमान को बदल दिया। जब वह उदित होता तो दाहिनी ओर हो जाता तथा जब डूबता है तो बायें ओर हो कर डूबता है, इसी प्रकार सूर्य की रोशनी इन पर ना पढ़ें।

सूर्य का अपने निर्धारित व्यवस्था से हट कर इस प्रकार उदित व डूबना अल्लाह की क़ुदरत की दलील तथा कह्फ के लोगों की करामत है।

इस आयत के विस्तार में इमाम फक्रउद्दीन राज़ी रह्मतुल्लाहि अलैह कहते हैः

भाषांतरः- सूर्य का इस प्रकार उदित तथा डूबना एक प्रकृति के विरुद्ध घटना है तथा वह विशाल करामत है जिसे अल्लाह तआ़ला ने कह्फ के लोगों को प्रदान किया।

(तफसीर कबीर, सुरह अल कह्फः 18:17)

पल भर में मीलों दूर से वज़नी तक़्त उपस्थित करना – आसिफ बिन बरख़िया की करामत

जब हज़रत सुलैमान अलैहिस सलाम ने अपनी सेना से कहा के तुम में कौन ऐसा व्यक्ति है जो बिलखीस के आने से पूर्व इन के सिंहासन को मेरे पास ले आए? तो जिन्नों में से एक शक्तिशाली जिन्न ने निवेदन किया के आप अपने स्थान से उठने से पूर्व मैं इसे आप के पास ला सकता हुँ।

आप ने कहाः मझे वह सिंहासन और तुरंत चाहिए। तब हज़रत आ़सिफ बिन बरखिया ने आज्ञा चाही तथा पलक झपकने से पूर्व आप की सेवा में वह सिंहासन ले कर उपस्थित हो गए।

सुरह अन नम्ल की आयत 40 में अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- (हज़रत सुलैमान अलैहिस सलाम की सेवा में) एक व्यक्ति ने निवेदन किया, जिस के पास किताब का ज्ञान था के मैं इस (बिलखीस का सिंहासन) को आप के पास ला सकता हुँ। इस से पूर्व के आप की आफ पलक झपके। फिर जब

(सुलैमान अलैहिस सलाम) ने इस (सिंहासन) को अपने पास रखा हुआ पाया तो फरमायाः ये मेरे रब का उदार अनुग्रह है।

(सुरह अन नम्लः 27:40)

इस आयत में सैयदना सुलैमान अलैहिस सलाम के एख उम्मती हज़रत आसिफ बिन बरखिया की करामत का वर्णन किया गया है।

वह बिल्खीस का तक़्त (सिंहासन) सोने का बना हुआ था। जिस पर अनमोल मोतियां ज़ी हुई थीं। वह सिंहासन सात महलों में से भीतर के महल में सुरक्षित रखा हुआ था। दरवाज़ों पर ताले थे। सुरक्षाकर्मी प्रबोधन कर रहे थे। ये बात बुद्धि में नहीं आती के इस प्रकार भारी तथा सुरक्षित सिंहासन को पल भर में एक देश से दूसरे देश लाया जा सके।

हज़रत आ़सिफ बिन बरखिया पल भर में इस भारी तथा उदस सिंहासन को यमन देश से सीरिया देश में हज़रत सुलैमान अलैहिस सलाम की सेवा में पेश कर दिया।

जैसा के अ़ल्लामा इब्न कसीर ने अपने विस्तार में तफसील वर्णन किया है (तफसीर इब्न कसीर, जिल्द 06, पः 191-193, सुरह अन नम्लः 27:40)

उपर्युक्त वर्णन आयतों से करामतों का सत्य एवं सही होना, स्पष्ट होता है।

करामत की सच्चाई तथा इस का सबूत क़ुरान की आयों से पेश किया गया। अब हदीसों के आधार में कुछ करामतें वर्णन किया जा रहा हैः-

हदीस शरीफ से करामत का सबूत

हदीसों में पूर्व उम्मतों के ऑलिया अल्लाह की करामतें एवं सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की करामतें विस्तार के साथ वर्णन हैं। जिन्हें वर्णन करने के लिए एक स्थाई पुस्तक लिखी जा सकती है।

यहाँ दलील के रूप में एक हदीस पाक वर्णन की जा रही है जिस से करामत की सच्चाई स्पष्ट होती है।

सहीह बुखारी में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः निश्चय अल्लाह तआला ने आदेश कियाः जो मेरे किसी वली से शत्रुता व दुश्मनी रखता है मैं इस से युद्ध की घोषणा करता हुँ। तथा मेरा बन्दा व दास मेरे दरबार में किसी चीज़ के माध्यम नज़दीकी व निकटता प्राप्त नहीं किया जो इस फर्ज़ से अधिक प्रिय हो जो मैं ने इस के ज़िम्मे किया है। तथा मेरा बन्दा नफीलों के द्वारा लगातार मेरी नज़दीकी प्राप्त करता रहता है। यहाँ तक के मैं इस से प्रेम व स्नेह करता हुँ। फिर जब मैं इसे अपना प्रिय व प्यारा बना लेता हुँ तो मैं इस के कान बन जाता हुँ जिस से वह सुनता है। मैं इस की आँख हो जाता हुँ जिस से वह देखता है। मैं इस का हाथ हो जाता हुँ जिस से वह पकड़ता है। मैं इस के पाँव हो जाता हुँ जिस से वह चलता है। यदि वह मुझ से प्रश्न करे तो मैं अवश्य व निश्चय इसे प्रदान करता हुँ तथा यदि वह मेरी पनाह की इच्छा व स्वेच्छा करे तो निश्चय मैं इसे पनाह देता हुँ। तथा मैं किसी चीज़ को करना चाहुँ तो इस से विलम्भ नहीं करता, जिस प्रकार मोमिन की जान लेने से विलम्भ करता हुँ जब के वह मृत्यु को अप्रसन्न करे, तथा मैं इस को तकलीफ देना स्वीकार्य नहीं करता।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 6502)

इस हदीस खुदसी से ऑलिया अल्लाह व धर्म के पूर्वजों की प्रतिभा व उत्तमता का प्रकटन तथा इन की करामत का वर्णन हो रहा है के जब इन का सुन्ना व देखना,

बोलना व चलने के पीछे अल्लाह तआ़ाला की प्रकृति निर्णन है तो वह अपने कान से निकट की भी सुनते हैं तथा दूर की भी, अपनी आँख से निकट को भी देख लेते हैं तथा दूर को भी, अपने हाथ में असामान्य व असाधारण शक्ति रखते हैं। अपने पाँव में उत्कृष्ट व अपरूप शक्ति रखते हैं।

इसी कारण से ऑलिया अल्लाह अपनी सुन्ने की शक्ति से वह आवाज़ सुनते हैं जो दूसरे नहीं सुन सकते। अपनी आँखों से वह दृश्य देखते हैं जिसे साधारण नेत्र नहीं देख सकती। अपने हाथों में धारण की वह शक्ति रखते हैं जो दुसरों के पास नहीं होती, वह अपना जोर क़दम इस रूप से रखते हैं जिस में एक क़दम में कई मंज़िलें तय कर लेते हैं।

ये हदीस पाक भी करामत की सुरक्षा पर दलील कर रही है।

हदीसों में पूर्व उम्मतों के ऑलिय अल्लाह एवं सहाबा किराम की करामतें विस्तार के साथ वर्णन की गईं। विद्वानों ने करामत के असबात व बयान में में ज़क़ीम पुस्तकें लिखी हैं। इस सिलसिले में इमाम अबु नुअम अहमद बिन अब्दुल्लाह असफहानी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 430 हिज्री) की पुस्तक हिलयतुल ऑलिया व तबक़ात उल असफिया, इमाम अबुल क़ासिम अब्दुल करीम बिन हवाज़िन खुशैरी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 465 हिज्री) की पुस्तक अर रिसालह अल खुशैरिया,

अल्लामा अब्दुल्लाह बिन असअद याफई रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 768 हिज्री) की पुस्तक

सहाबा किराम व अहले-बैत किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की करामतें हदीस की पुस्तकों में उपलब्ध हैं। यहाँ हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की कुछ करामतें वर्णन करने की कृपा प्राप्त की जा रही है ताकि उन करामतों को पढ़ने तथा सुनने से इन लोगों का सम्मान दिलों में उजागर होः-

इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामतें

हज़रत सैयदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जन्म 15 रमज़ान 3 हिज्री में हुआ। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जन्म के सातवें दिन आप का अखीखा किया एवं हसन नाम रखा।

नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के धन्य शहज़ादे हज़रत सैयदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की पावन सीरत को देखने से पता चलता है के आप ने इसलाम की सरबुलंदी के लिए विशाल क़ुरबानियाँ व बलिदान दिया है।

आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की विनम्रता एवं भावना, फिरासत व दूर-अंदेशी का परिणाम है के आप के दौर में मुसलमानों की दो बड़ी जमातों में एकता स्थापित हो एवं लाखों सदस्य का खून बेहने से रह गया। इसलामी शरीअत पर दृढ़ता व निष्ठा के साथ अमल करना तथा इसलामी कानून पर निष्ठा के साथ कारबंद रेहना असल करामत बल्कि करामत से बढ़ कर है।

49 हिज्री में आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत हुई। आप की बहुत सारी करामतें स्पष्ट हुई हैं जिन में से कुछ करामतें का वर्णन किया जाता है।

बेअदबी की सज़ा

करामतः01

छठी सदी हिज्री के नामवर मुहद्दिस इमाम अबु अल खासिम अली बिन हसन नामवर बा इब्न असाकिर रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 571 हिज्री) ने उच्च ताबई हज़रत अमश रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित व्याख्या कियाः

भाषांतरः हज़रत अमश रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के एक बदबक़्त व्यक्ति ने सैयदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य

मज़ार व समाधि पर बदबक़्ती से गंदगी (बोल व बराज़) किया तो वह उसी समय बागल तथा दीवाना हो गया तथा मरते दम तक कुत्तों की तरह भौंकता रहा, फिर मृत्यु के बाद उस की क़ब्र से भयानक आवाज़ से कुत्ते की भौंकने की आवाज़ सुनाई देती।

(तारीक़ दिमश्क, जिल्द 13, पः 305 / जामेअ करामात उल ऑलिया, जिल्द 01, पः 131)

इस करामत को हज़रत अल्लामा यूसुफ बिन इसमाईल नबहानी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 1350 हिज़्री) जो सीरिया देश के उच्च विद्वान गुज़रे हैं, उन्हों ने अपनी पुस्तक जामेअ करामात उल ऑलिया में तबखात मुनावी पुस्तक तथा अबु नुअम से व्याख्या किया है।

मालूम हुआ के अल्लाह तआला के महबूब व प्रिय बन्दों की बेअदबी की जाए ते ऐसी सज़ा दी जाती है जिस को ज़माने वाले, ज़माने दराज़ तक याद रखते हैं। जब इस बदबक़्त व्यक्ति ने धन्य मज़ार का निरादर व असम्मान किया तो अल्लाह तआला ने उस की बुद्धि नाश कर दी तथा जुनून की बीमारी में फंसा गया।

इस लिए के उस ने अपनी बुद्धि को उपयोग करने के बजाए बदबक़्ती का प्रदर्शन किया तथा धन्य मज़ार का अनादर किया, उस व्यक्ति का जुनून साधारण पागलों जैसा नहीं था। अल्लाह तआला को ये स्वीकार था के उस की खूब ज़िल्लत व रुसवाई हो।

इस लिए साधारण पागलों के खिलाफ वह कुत्तों की तरह भोंकने लगा, जब तक दुनिया में जीवित रहा उसी ज़िल्लत का जीवन बिताता रहा तथा जब मर गया तो उस की क़ब्र से कुत्ते भोंकने की आवाज़ आया करती थी।

ये घटना मुसलमान उम्मत के लिए बड़ी इबरत व अभ्यास का माध्यम है तथा नसीहत व उपदेश का साधन है। अल्लाह तआला सब को अदब व सम्मान का लिहाज़ रखने की तौफीक़ व मार्गदर्शन प्रदान करे।

दुआ की बरकत से हबशी को लड़का पैदा हुआ

करामतः 02

नवीं सदी हिज्री के नामवर बुज़ुर्ग हज़रत नूरउद्दीन अब्दुर रहमान बिन अहमद जामी खुरासानी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 898 हिज़्री) ने शवाहिद उन नुवुव्वह में लिखा हैः-

हज़रत सैयदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज्ज के अवसर पर पावन मक्का पैदल तशरीफ ले जा रहे थे तो आप के धन्य क़दम में वरम आ गया। आप के गुलाम ने विनती की के आप किसी सवारी पर सवार हो जाएँ ताकि क़दमों की सूजन कम हो।

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने गुलाम की विनती स्वीकार ना की और फरमायाः जब अपनी मंज़िल पर पहुँचुँ तो तुम्हें एक हबशी मिलेगा। उस से तेल खरीद लो। आप के गुलाम ने कहाः हम ने किसी भी स्थान कोई दवा, ना पाई और जब अपनी मंज़िल पर पहुँचे तो हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया ये वही गुलाम है जिस के बारे में तुम से कहा गया।

जाओ! उस से तेल खरीदो और क़ीमत संपादन कर दो। गुलाम जब तेल खरीद ने के लिए हबशी के पास गया और तेल पूछा तो हबशी ने कहाः किस के लिए खरीद रहे हो? गुलाम ने कहाः हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिए। तो हबशी ने कहाः मुझे आप के पास ले चलो। मैं आप का गुलाम हुँ।

जब हबशी हज़रत के पास आया तो निवेदन कियाः मैं आप का गुलाम हुँ, आप से तेल की क़ीमत नहीं लुँगा? बस मेरी पत्नी के लिए दुआ करीए। वह गर्भवती है र दुआ करीए के अल्लाह तआला स्वस्थ्य बच्चा प्रदान करे। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः घर जाओ! अल्लाह तआला ने तुम्हें वैसा ही बच्चा प्रदान करेगा जैसा के तुम चाहते हो, और वह हमारा आज्ञाकारी रहेगा।

हबशी घर पहुँचा तो तो घर की हालत वैसी ही पाई जैसी उस ने हज़रत सैयदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से सुनी थी।

(शवाहिद उन नुबुव्वह, पः 302)

इस घटने में हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की 2 करामत वर्णन हैं-

प्रथम करामतः आप ने पेहली ही बताया के पैरों का वरन कम होने की दवा कहाँ और किस के पास मिलेगी।

दुसरी करामतः आप ने ये वर्णन किया के हबशी के इच्छा के अनुसार सही व स्वस्थ्य लड़का होगा और वह लड़का अहले-बैत किराम का आज्ञाकारी व फर्माबरदार होगा।

पल भर में खजूर का फलदार पेड़ पैदा हुआ

करामतः 03

हज़रत नूरउद्दीन अब्दुर रहमान बिन अहमद हामी खुरासानी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 898 हिज्री) ने शवाहिद उन नुबुव्वह में लिखा हैः-

हज़रत सैयदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक दिन हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के किसी बेटे के साथ यात्रा में थे, एक कुश्क बाग में कुछ देर के लिए निवास व विश्राम किया।

हज़रत इब्न ज़ुबैर ने कहाः काश उस बाग में कुछ ताज़ा खजूर होते ते हम खाते, हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः ताज़ा खाना चाहते हो? हज़रत इब्न ज़ुबैर ने कहाः हाँ! हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दुआ के लिए हाथ उठा कर कुछ तिलावत करे।

अचानक खजूर का एक पेड़ प्रकट हुआ और उस को ताज़ा खजूर लग गए, हज़रत इब्न ज़ुबैर के एक साथी ने कहाः ये तो जादू है। सैयदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः ये जादू नहीं बल्कि इस दुआ का असर है जो अल्लाह तआला के पैगम्बर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बेटे ने की थी।

फिर लोगों ने उस पेड़ पर चढ़ कर ताज़ा खजूर तोड़े जिन से सम्पूर्ण लोग पेट भर के खाया।

(शवाहिद उन नुबुव्वह, पः 302 / शहादतनामा, लेखकः हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह, पः 93)

ज़हर का असर ना हुआ

करामतः 04

पाँचवीं सदी हिज्री के नामवर मालिकी फिक़्ह हज़रत अबु उमर यूसुफ बिन अब्दुल्लाह नामवर इब्न अब्दुल बर्र रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 463 हिज्री) ने अपनी पुस्तक अल इसतियआब फी मअरिफती अस्हाब में रिवायत वर्णन की हैः-

भाषांतरः हज़रत उमैर बिन इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैह से वर्णित है, आप फरमाते हैं के हम हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सेवा में थे। आप हमाम में गए फिर तशरीफ ला कर फरमायाः मुझे कई बार धोके से ज़हर पिलाया गया परन्तु इस बार की तरह अत्यन्त व शदीद नहीं, इसका असर है के मैं ने अपने जिगर का एक टुकड़ा थूका है, तीर में लकड़ी से उसको उलटाता, पलटाता रहा, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने निवेदन कियाः भाईजान! आप को किस ने ज़हर दिया? इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः आप क्या चाहते हैं? क्या उसे हत्या कर दोगे? हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहाः हाँ! आप ने फरमायाः मैं जिस को अपराधी व दोषी समझता हुँ, यदि वही है तो अल्लाह तआला बहुत सख्त सज़ा देने वाला है, और यदि कोई दुसरा व्यक्ति है तो मैं नहीं चाहता के मेरे कारण से बेगुनाह को सज़ा दी जाए।

(अल इसतियआब फी मअरिफती अस्हाब)

उपर्युक्त वर्णन घटना इसी पुस्तक में हज़रत खतादह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से भी मरवी है।

सब विद्वानों के पास ये कर्म निश्चय व अनुकूल है के अल्लाह तआला ने ऑलिया अल्लाह की करामतों को सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के

मुअजेज़ात (चमत्कार) का कृपा बनाया है। प्रत्येक वली की करामत फैज़ाने-नबूवत का असर है।

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को कई बार ज़हर दिया गया परन्तु इस का असर व प्रभाव, प्रकट ना हुआ। आप की ये करामत इस मुअजेज़े के फैज़ान से है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को यहूदी महिला ने गोश्त में ज़हर खिलाया था परन्तु सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर इस का असर ना हुआ।

इमाम हसन के लिए रास्ता रोशन हो गया

करामतः 05

इमाम अबु नुअम अहमद बिन अब्दुल्लाह अस्फहानी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 430 हिज्री) ने अपनी पुस्तक दलाईल उन नुबुव्वह में लिखा हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमायाः एक समय अँधेरी रात में हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास उपस्थित थे, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु

तआला अलैहि वसल्लम आप से बेपनाह मुहब्बत व प्रेम किया करते, इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने निवेदन कियाः मैं अपनी आदरणीय माँ के पास जाना चाहता हुँ, हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः मैं ने निवेदन कियाः मैं इन के साथ जाऊँ या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम? इतने में आसमान से एक नूर प्रकट हुआ जिस की रोशनी में चलते हुए हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आदरणीय माँ के पास पहुँच गए।

(दलाईल उन नुबुव्वह, हदीस संख्याः 487)

अँधेरी रात में आसमान से रोशनी का प्रकट होना और उस रोशनी में चलना सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फैज़ान से इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामत है।

इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामतें

शहीदों के सरदार हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का धन्य जन्म 05 शअबान 04 हिज्री को हुआ। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने खुद अपने धन्य लुआब (थूक) से आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुँह में ड़ाला। कान में आज़ान इरशाद फरमा कर मुबारक नाम हुसैन रखा।

आप के लिए बरकत की दुआ की और सातवें दिन आप का अखीखा किया। आशूरे के दिन 10 मुहर्रम 61 हिज्री में आप को करबला के मैदान में अत्याचारी यज़ीदियों ने शहीद किया। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की विशाल प्रतिभा तथा बेशुमार प्रतिष्ठा हैं।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की प्रतिष्ठा से संबंधित लेखक की पुस्तक हक़ानियत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हदीसे-क़ुस्तुनतुनिया की तहक़ीक़ उर्दू में, और अँग्रेजी में "IMAM HUSSAIN – THE TRUE IMAM AND THE HADITH OF CONSTANTINOPLE" और हिन्दा में इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सत्यता और क़ुस्तनतुनिया की हदीस की सच्चाई पढ़ी जा सकती है।

आप की पावन ज़ात निपुण करामत है। सीमित रूप से यहाँ आप की कुछ करामतें लिखी जाती हैं।

धन्य थूक की बरकत

करामतः 01

तीसरी सदी हिज्री के मुहद्दिस मुहम्मद बिन सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (देहान्तः 230 हिज्री) ने तबखातुल कुबरा में रिवायत व्याख्या की हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु औन से वर्णित है, उन्हों ने फरमायाः सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब मदीने पाक से मक्का जा रहे थे तो इब्न मुतीअ के पास से आप का गुज़र हुआ जो कुँआ खुदा रहे थे। निवेदन कियाः मेरे माता-पिता आप पर क़ुरबान! कहाँ का उद्देश्य है? हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः मक्के का उद्देश्य है और इब्न मुतीअ से ये भी वर्णन किया के कूफा के लोगों ने पत्र भेजे हैं। इब्न मुतीअ ने निवेदन कियाः मेरे माता-पिता आप पर फिदा हों! आप की पाक ज़ात से हमें अधिक फैज़-याब कीजिए। और उन के पास ना जाएँ, इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इन्कार किया, तो इब्न मुतीअ ने अपनी एक अवश्यकता पेश की और विनती कीः मैं ने ये कुँआ खुदवाया है और आज ड़ोल में थोड़ा सा पानी निकला है। आप इस में बरकत के लिए अल्लाह तआला से दुआ कीजिए। इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः इस का थोड़ा पानी लाओ। जब पानी आपकी सेवा में पेश किया गया तो आप ने कुछ, पानी पी कर कुल्ली की फिर उस पानी को कुँएं में ड़ाल दिया तो कुँए का पानी मीठा बन गया और अधिक मात्रा में उबलने लगा।

(अल तबक़ात अल कुबरा ली इब्न सआद, बाबु अबु सअईद)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की धन्य ज़ुबान तथा धन्य थूक (दहन) को ये सम्मान प्राप्त है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आप की ज़ुबान चूस लिया करते थे और आप के मुँह में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपना पवित्र थूक ड़ाला था।

अर्थात इस का प्रभाव व असर इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की धन्य ज़ुबान व थूक में आ चुका था इसी कारण से आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का धन्य थूक खारे पानी को मीठा बना देता और सूखे कुँए को जारी कर देता।

तीर फैंकने वाले का परिणाम

करामतः 02

अल्लामा मुहम्मद बिन यूसुफ सालिही रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 942 हिज्री) ने सुबुल उल हुदा वर रशाद में रिवायत व्याख्या की हैः-

भाषांतरः अब्बास बिन हिशाम बिन मुहम्मद कूफी ने अपने पिता से वे दादा से रिवायत करते हैं, उन्हों ने कहाः ज़रअ नाम का एक व्यक्ति करबला के मैदान में था। उस दुष्ट प्राणी ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर उस समय तीर फैंका जब आप ने पीने के लिए पानी माँगा तथा पीना चाहा, वह तीर आप के और पानी

के बीच हाइल हो गया। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दुआ की के अल्लाह इस को प्यासा कर दे, रावी केहते हैं- उस की मृत्यु के समय उपलब्ध व्यक्ति ने मुझे वर्णन किया के उस व्यक्ति के पेट में गरमी, पीठ में सरदी होने लगी जिस के कारण वह चीखने और चिल्लाने लगा। जबके पीट की गरमी से विश्राम के लिए उस के सामने बर्फ और फंके रखे गए थे और पीठ की सरदी के कारण पीछे सुराही रख दी गई थी, वह केहता थाः मुझे पान पलाओ। प्यास ने मुझे नाश कर दिया, तो उश के पास जौं, पानी और दूध मिला हुआ इतना अधिक शहद लाया जाता जो 5 आदमी को काफी होता तो वह सब कुछ खा लेता फिर यही केहता मुझे पिलाओ, प्यास ने मुझे नाश कर दया फिर उस का पेट चर गया जिस प्रकार ऊँट का चर जाता है।

(सुबुल उल हुदा वर रशाद, जिल्द 11, पः 79)

जिस बेटे की मुहब्बत व प्रेम में क़ुरान पाक प्रकट हुआ, हदीसें वारिद हुई, उन पर तीर चलाने वाले का दुनिया में इस प्रकार इबरतनाक परिणाम हुआ के आराम व विश्राम के सम्पूर्ण चीज़ें होने के बावजूद वे राहत प्राप्त ना कर सका। वह पेट की हरारत की शिकायत में फंसा रहा और पीठ में अतन्यत हानिकारक ठण्डक से बेचैन रहा।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का निरादर करने के कारण से उसी बेचैनी में जीवन बिताता रहा और जब मृत्यु आई तो अत्यन्त इबरतनाक मृत्यु आई। अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति को इस प्रकार असाधारण तकलीफों में फंसा कर के ये स्पष्ट किया के अहले-बैत पाक पर अत्याचार व कठोरता करने वालों का दुनिया में इबरतनाक परिणाम होता है तथा आखिरत का अज़ाब तो और अधिक कठिन है।

धन्य गालों को घायल करने वाले की मृत्यु

करामतः 03

इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर में रिवायत व्याख्या की हैः-

भाषांतरः क़बीले बनी कल्ब के एक व्यक्ति से रिवायत है के एक अत्याचारी व्यक्ति ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर तीर से हमला किया जिस से आप का जबड़ा घायल हो गया। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दुआ की, अल्लाह तआला तुझे सैरयाब ना करे, उसी समय अत्याचारी प्यासा हो गया, वह पानी पीता रहा यहाँ तक के शरीर फटा और मर गया।

(अल मुअजम अल कबीर लित तबरानी, हदीस संख्याः 2772)

उस व्यक्ति के तीर से इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का धन्य गाल घायल होकर फट गया जब के आप पानी पी रहे थे। इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तकलीफ पहुँचाने के कारण अल्लाह तआला ने उस का ये अंजाम किया के वह लगातार पानी पीता रहा, फिर भी प्यास ना बुझी।

अंत में उसका शरीर फट गया। अत्याचारी ने धन्य गाल को घायल किया, अल्लाह तआला ने उस को अस्तित्व व हस्ती को फाड़ कर उसे नाश व नष्ट कर दिया।

उलटी के कारण पानी निकल गया

करामतः 04

अल्लामा इब्न असीर रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 630 हिज्री) ने अल कामिल फित तारीक़ में इसी प्रकार की एक घटना वर्णन की हैः-

भाषांतरः अब्दुल्लाह बिन अबिल हसीन ने पुकार कर कहाः अए हुसैन! क्या आप पानी को नहीं देखते? प्यास की हालत में आप की शहादत होगी परन्तु एक बूंद

पानी नहीं चखोगे। सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दुआ कीः अए अल्लाह! इस को प्यासा मार दे और कभी इस की मग़फिरत व मुक्ति ना कर। इस के बाद वह व्यक्ति ऐसा बीमार हुआ के थोड़ा पानी पीता और उलटी करता। फिर लौट कर पानी पीता परन्तु प्यास ना बुझाता, फिर उलटी करता, फिर पीता परन्तु प्यास ना बुछ्ती, मरने तक उस का यही हाल रहा यहाँ तक के वह नष्ट व हलाक हो गया।

(अल कामिल फित तारीक़, पः 167)

अत्याचारी अब्दुल्लाह बिन अबिल हसीन ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा के "एक बूंद पानी ना चखोगे"। उस का परिणाम किस प्रकार इबरतनाक हुआ के थोड़ा सा पानी पीता के उलटी कर लेता, जैसे पानी ने गवार ना किया के इस अत्याचारी व ज़ालिम के पेट में बाखी रहे।

कठिन प्यास से मृत्यु

करामतः 05

हज़रत अल्लामा इब्न असीर रहमतुल्लाहि अलैह ने इसी प्रकार की एक तफसीली घटना वर्णन की हैः-

भाषांतरः जब इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शदीद प्यास लगी तो पानी पीने के लिए दरयाए फुरात के खरीब हुए, हिस्सीन बिन नमीर नाम एक दुष्ट अत्याचारी ने तीर से हमला किया। जो आप के धन्य मुँह पर लगा, इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने खून को अपने हाथ में ले कर आसमान की ओर फैंके और अल्लाह तआला की हम्द व सना की और निवेदन कियाः अए अल्लाह! तेरे नबी के नवासे के साथ जो कुछ अत्याचार व सितम किया जा रहा है मैं इस को तेरे हवाले करता हुँ। अए अल्लाह! एक एक को अज़ाब दे और बिना निस्सहाय व बेसहारा हलाक रक दे, इन में से किसी को बाखी ना रख। व्याख्या है के तीर फैंकने वाला व्यक्ति क़बीले बनी अबान बिन दारिम से संबंध रखता था। वह अभी कुछ देर ना ठहरा था के अल्लाह तआला ने इस को कठिन प्यास से बेचार कर दिया जिस के कारण इस की प्यास ना बुझती थी। इस को पंखे से हवा की जाने लगी और ठण्डा पानी और बड़े प्यालों में दूध दिया जाने लगा। परन्तु वह केहता थाः मुझे सैरयाब करो। तो उस को बड़े बरतनों में पानी दिया जाता, वह पी लेता तथा कुछ देर लेट जाता फिर केहता मुझे सैरयाब करो, प्यास ने मुझे हलाक कर दिया। कुछ देर नहीं ठहरा था के उस का पेट ऊँट के पीठ की तरह फट गया।

(अल कामिल पित तरीक, ज़िक्रु मखतलिल हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

अल्लामा इसमाईल इब्न कसीर (देहान्तः 774 हिज्री) ने भी इस करामत का वर्णन अपनी पुस्तक अल बिदायह वन निहायह में किया हैः-

उपर्युक्त वर्णन रिवायतों से ये बात स्पष्ट होती है के करबला के मैदान में सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, मजबूर व लाचार नहीं थे, यज़ीदियों ने करबला के मैदान में जब अहले-बैत किराम का असम्मान व निरादर किया।

उन पर अत्याचार व सितम के पहाड़ तोड़े तो इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यज़ीदियों के विरुद्ध दुआ की, जिस के कारण से कटी यज़ीदियों को दुनिया में दोज़ख का दृश्य देखना पड़ा। कोई कठिन प्यास के कारण से हलाक व नाश हुआ, किसी का पेट किसी का सारा शरीर शक़ हो गया।

आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यदि चाहते तो करबला में ही सारे यज़ीदी अपना वेहशतनाक परिणाम देख लेते किन्तु इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अल्लाह तआला की मरज़ी व सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मरज़ी को अपना उद्देश्य व लक्ष्य बनाया जैसे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने पेहले ही आप को इस परीक्षा की सूचना प्रदान की थी।

इस के अनुसार आप ने दुनिया की चंद दिनों तकलीफ व दुख सहन कर के क़ियामत तक इसलाम का झण्डा बुलंद कर दिया। और सामयिक रूप से यज़ीदियों को अपनी करामतों के द्वारा बताया के हम नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अधिकारी नवासे हैं, हम अल्लाह तआला की संतुष्टि के आज्ञाकारी और उस के आदेश के पाबंद हैं। अत्याचारों के सामने मजबूर नहीं बल्कि हर तरह का अधिकार रखते हैं।

गुस्ताख की सवारी बेक़ाबू हो गई

करामतः 06

इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर में इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इस करामत को व्याख्या किया हैः-

भाषांतरः हज़रत अलख्मा बिन वाईल या वाईल बिन अलख्मा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है उन्हों ने कहाः मैं करबला के मैदान में उपलब्ध था। एक व्यक्ति उठा और केहने लगाः क्या तुम में हुसैन उपलब्ध हैं? लोगों ने कहाः हाँ! उस ने कहाः आप दोज़ख़ पर खुश हो जाइए (मअज़अल्लाह) सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः ऐसा ना कह बल्कि कृपाशील व दयावान रब

और शफाअत करने वाले रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से मिलने की शभ-सूचना दे। सारी कायनात जिन की आज्ञापालन करती है और बता तू कौन है? उस ने कहा मैं इब्न जुवैज़ा हुँ। रावी केहते हैः या उस ने कहाः मैं इब्न जुवैज़ा कहाः कहाः इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहाः अए अल्लाह इस को आग में खींच कर ड़ाल दे, उसी समय उसकी सवारी बेक़ाबू हो गई, वह सवारी से गिरा और उसका एक पैर रकाब में फंस गया, रावी केहते हैं- अल्लाह की क़सम! रकाब में फंसे हुए पैर के सिवा उस के शरीर का कोई अंग बाखी ना रहा।

(अल मुअजम अल कबीर लित तबरानी, हदीस संख्याः 2780)

इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में दोज़ख़ की बात केहने वाला उसी पल नाश हो गया तथा उसके अस्तित्व को मिटा दिया गया।

इमाम अबु बक्र इब्न अबी शैबा रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी मुसन्नफ में, इमाम नूरउद्दीन अली हैसमी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 807) ने मजमअ उज़ ज़वाईद में, और अल्लामा इब्न असीर रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 630 हिज्री) ने अल कामिल अत तारीक़ में इस करामत को वर्णन किया।

सुबुल उल हुदा वर रशाद, जिल्द 11, पः 07 में उल्लेख है, मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, हदीस संख्याः 261 में। मजमअ उज़ ज़वाईद, बाबु मनाखिबिल हुसैन बिन अली अलैहिस सलाम में, अल कामिल फित तारीक़, बाबु ज़िक्री मखतलुल हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

रुसवाई भाग्य बन गया

करामः 07

2 यज़ीदियों से संबंधित इमाम तबरानी रहमतुल्लाहि अलैह ने मुअजम कबीर में तफसीली रिवायत व्याख्या किया है, जिस में एक व्यक्ति के बारे में हज़रत सुफयान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैः-

भाषांतरः मैं ने उन दोनों में से एक के बेटे को देखा उस पर पागलपन और जुनून तारी है।

(मुअजम कबीर तबरानी, हदीस संख्याः 2788)

उपर्युक्त वर्णन रिवायत को अल्लामा इब्न हजर असखलानी रहमतुल्लाहि अलैह ने तहज़ीब उत तहज़ीब, बाबु मनिसमुहू हाबिस में और अल्लामा हैसमी रहमतुल्लाहि अलैह ने मजमअ उज़ ज़वाईद, मनाखिबिल हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में व्याख्या किया है।

अल्लाह तआला हमें इस से बचाए! कितनी इबरतनाक सज़ा है निश्चय जो लोग अल्लाह के महबूबों के शत्रु व विरोधी होते हैं इन को दुनिया में रुसवाई और आखिरत में नुकसान व हानिकार होता है।

बेअदब की दृष्टि चली गई

करामतः 08

चौथी सदी हिज्री के विशाल मुहद्दिस इमाम तबरानी रहमतुल्लाहि अलैह ने मुअजम कबीर में रिवायत किया हैः-

भाषांतरः हज़रत क़ुर्रा बिन खालिद से वर्णित है, उन्हों ने फरमायाः मैं ने अबु रजा अतारुदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से सुना, वे फरमाते हैः सैयदना अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तथा अहले-बैत की प्रतिभा व शान में बेअदबी ना करो क्यों के एक

क़बीले से संबंध रखने वाला एक पड़ोसी केह रहा थाः लोगो! क्या तुम ने इस पापी हुसैन बिन अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को नहीं देखा (मअज़अल्लाह), ये केह रहा ही था के अल्लाह तआला ने 2 सितारे इस की आँखों पर मारे और उस की बीनाई छीन ली।

(अल मुअजम अल कबीर लित तबरानी, हदीस संख्याः 2730 / सुबुल उल हुदा वर रशाद, जिल्द 11, पः 78 / तहज़ीब उत तहज़ीब, बाबु मनिसमुहू हाबिस)

उस बेअदब व्यक्ति ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसी विशाल व महान हस्ती की ओर फासिख (पापी) केह कर इशारा किया और लोगों को देखने के लिए कहा, अल्लाह तआला ने उस की बीनाई ले ली, वह आँख जो इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को फासिख समझ कर देखे उस आँख को देखने का अधिकार नहीं।

धन्य वस्त्र छीनने की सज़ा

करामतः 09

अल्लामा इब्न असीर ने अल कामिल फित तारीक़ में लिखा हैः-

भाषांतरः उमर बिन सअद ने लोगों में घोषणा की के कौन है जो इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुक़ाबले में एगा और अपने घोड़े से (मअज़अल्लाह) इन को रोंगदेगा? तो 10 दुष्ट प्राणी आगे बड़े, इन में एक का नाम इसहाक़ बिन हयत हज़रमी है, ये वह व्यक्ति है जिस ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की धन्य वस्त्र छीनी थी उस के तुरंत बाद वह व्यक्ति कोढ़ की बीमारी में फंस गया।

(अल कामिल फित तारीक़, ज़िक्रु मखतली हुसैन)

उपर्युक्त वर्ण घटना से मालूम हुआ के अहले-बैत पाक व सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की बेअदबी (निरादर व असम्मान) का परिणाम ये हुआ के वह व्यक्ति कोढ़ की बीमारी में फंस गया। उस व्यक्ति ने धन्य वस्त्र छीन कर निरादर किया जिस का संबंध शरीर के ज़ाहिरी हिस्से से है, अल्लाह तआला ने सज़ा के रूप में उसे कोढ़ की बीमारी में फंसा कर के उस की त्वचा को बदनुमा कर दिया।

धन्य सर पर – अनवार-इलाही का प्रकटन

करामतः 10

चौथी सदी हिज़्री के मुहद्दिस जलील हज़रत मुहम्मद बिन हिब्बान तमीमी दारिमी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 354 हिज़्री) ने अपनी पुस्तक अस सिखात और सियारह लि इब्न हिब्बान में व्याख्या किया हैः-

भाषांतरः उबैदउल्लाह बिन ज़ियाद ने अहले-बैत किराम की फट गया, किसी का सारा शरीर शक़ हो गया।

आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यदि चाहते तो करबला में ही सारे यज़ीदी अपना वेहशतनाक परिणाम देख लेते किन्तु इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अल्लाह तआला की मरज़ी व सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मरज़ी को अपना उद्देश्य व लक्ष्य बनाया जैसे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने पेहले ही आप को इस परीक्षा की सूचना प्रदान की थी।

इस के अनुसार आप ने दुनिया की चंद दिनों तकलीफ व दुख सहन कर के क़ियामत तक इसलाम का झण्डा बुलंद कर दिया। और सामयिक रूप से यज़ीदियों को अपनी करामतों के द्वारा बताया के हम नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अधिकारी नवासे हैं, हम अल्लाह तआला की संतुष्टि के आज्ञाकारी और उस के आदेश के पाबंद हैं। अत्याचारों के सामने मजबूर नहीं बल्कि हर तरह का अधिकार रखते हैं।

धन्य सर पर – अनवार-इलाही का प्रकटन

चौथी सदी हिज्री के मुहद्दिस जलील हज़रत मुहम्मद बिन हिब्बान तमीमी दारिमी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 354 हिज्री) ने अपनी पुस्तक अस सिखात और सियारह लि इब्न हिब्बान में व्याख्या किया हैः-

भाषांतरः उबैदउल्लाह बिन ज़ियाद ने अहले-बैत किराम की उच्च महिलाओं तथा लाड़ले बच्चों के साथ इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पावन सर को सीरिया देश ले जाने का आदेश दिया। जब भी क़ाफिले वाले किसी स्थान पर पड़ाव ड़ालते तो इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य सर को सन्दूक़ से निकालते और मअज़अल्लाह एक भाले पर रखते और कोच करने तक उस की सुरक्षता करते। फिर रवाँगी का मौक़ा हो तो धन्य सर को सन्दूक़ में रखते तथा रवाना हो जाते। इस प्रकार वह लोग एक स्थान पर उतरे जो ईसाई इबादतस्थल था और वहाँ एक तपस्वी था। अपने दस्तूर के अनुसार अत्याचारों ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य सर को भाले पर रखा और इबादतस्थल की किसी स्थान पर भाला लगा दिया। इबादतस्थल में रेहने वाले ईसाई ने रात में देखा के इबादतस्थल से आकाश की ओर विशाल व सर्वोत्तम नूर बुलंद हो रहा है। उस तपस्वी ने तुरंत ज़ालिमों के पास आ कर कहाः तुम कौन हो और ये पवित्र सर किस का है? लोगों ने कहाः हम सीरिया के नागरिक हैं और ये धन्य सर इमाम हुसैन

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का है। उस ने कहाः तुम कैसी बदबक़्त क़ौम हो, खुदा की क़स्म! यदि हज़रत ईसा अलैहिस सलाम की धन्य वंश का कोई सदस्य उपलब्ध रेहता तो हम इस का ऐसा सम्मान व आदर करते के उस को अपनी आँखों पर रखते, फिर कहाः अए लोगो! मुझे 10,000 दीनार मेरे पूर्वजों से विरासत में मिले हैं, यदि मैं 10,000 दीनार तुम्हें दे दुं तो क्या धन्य सर आझ रात रखने के लिए मुझे दोगे? लोगों ने कहाः क्यों नहीं। बस ईसाई तपस्वी ने दीनार की थैली डाल दी, उन लोगों ने दीनार गिन कर थैली में रख लिए और उस पर मोहर लगा कर सन्दूक़ में सुरक्षित कर लिए, फिर धन्य सर को ईसाई तपस्वी की ओर बढ़ाया।

तपस्वी ने अत्यन्त सम्मान व आदर के साथ धन्य सर ले कर इस को स्नान दिया और अपनी गोद में रख कर रात भर रोता रहा जब सवेरे का समय खरीब हुआ तो कहाः अए पावन सर! मैं अपने आप ही पर क़ाबू रखता हुँ और गवाही देता हुँ के अल्लाह तआला के सिवा कोई मअबूद नहीं तथा आप के नाना हज़रत, अल्लाह के रसूल हैं, ये केह कर मुसलमान हुआ और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की गुलामी में शामिल हुआ फिर धन्य सर को उन के हवाले किया, उन लोगों ने धन्य सर को फिर से सन्दूक़ में रखा और रवाना हो गए, जब दमिश्क के खरीब पहुँचे ते केहने लगे के हम 10,000 दीनार आपस में बाँट लेते हैं, यदि यज़ीद देख लेगा तो हम से छीन लेगा। अर्थात सन्दूक़ खोल कर दीनार की थैली जैसे ही खोली तो क्या देखते हैं के वह दीनार कंकड़ियाँ बन चुके हैं और उसी समय गली की एक ओर ये आयत लिखी हुई पाईः

भाषांतरः अत्याचारी जो कुछ करते हैं अल्लाह तआला को उस से कभी असावधान ना समझो।

(सुरह इबराहीमः 14:42)

भाषांतरः शीघ्र अत्याचार कनरे वाले जान लेंगे के वह कैसी बुरी जगह लौटेंगे।

(सुरह अश-शुअराः 26:227)

ये घटना देख कर कुछ लोगों ने तौबा की और कुछ इसी हाल पर स्थापित रहे।

(*अस सिखात ली इब्न हिब्बान / सियारह ली इब्न हिब्बान*)

ईसाई तपस्वी ने जो कहा के मेरे पूर्वजों की कमाई मुझे विरासत में मिली है उस में इशारा है के पूर्वज की पूँजी जाती है तो जाए, कोई दुख की बात नहीं परन्तु इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की धन्य संगत व सोहबत एक पल के लिए उपलब्ध हो जाए, ये बड़ी नेअमत व वरदान है आप की पावन सोहबत आखिरत की पूँजी प्रदान करती है। दुनिया का धन कंकड़ियाँ बन सकती हैं परन्तु आखिरत की पूँजी स्थापित व अक्षत रेहगी।

ये ग़ौर करने का स्थान है के ईसाई व्यक्ति हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य सर की बरकतें देख कर इसलाम से आभूषण हो गया तथा अत्याचारों को जो ज़ाहिर कलिमा पढ़ने वाले थे या तो अनवार नज़र ना आए या फिर देख कर भी बदबक़्ती दामन से ना छूटी तथा उन्हों ने इन बरकतों से कुछ लाभ ना उठाया।

मालूम हुआ के अहले-बैत पाक से मुहब्बत व अखीदत बेईमान को ईमानवाला बना देती है तथा ज़ाहिर रूप से कलिमे वाले हैं परन्तु शत्रुता व द्वेष के कारण, ईमान और उसकी बरकत से महरूम होते हैं।

कितना विशाल अंतर है के दुनियवी धन व सम्पत्ति के लिए कुछ लोगों ने अपना ईमान बेच दिया और अहले बैत किराम के साथ, अत्याचारी व्यवहार किया और कोई ग़ैर-मुसलिम धन व सम्पत्ति खर्च कर के अहले-बैत पाक के साथ कुशल व भला व्यवहार करता है और इन का सम्मान व आदर करता है तो उसे ईमान नसीब होता है।

उधर माल व धन के लिए ईमान बेच दिया जा रहा है। इधर माल व धन दे कर ईमान प्राप्त किया जा रहा है।

आकाश से धरती तक नूर के स्तम्भ का नज़ारा

करामतः 11

अल्लामा इब्न असीर रहमु ने रिवायत व्याख्या की हैः-

भाषांतरः हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद आप के और अन्य शहीदों के धन्य सरों को ख़ौली बिन यज़ीद और हमीद बिन मुसलिम के साथ इब्न ज़ियाद के पास रवाना किया गया। ख़ौली महल को बंद पाया तो अपने घर आया और पवित्र सर को घर में एक बड़े बरतन के नीचे रखा और विश्राम के लिए बिस्तर के पास आया और अपनी पत्नी से कहाः जिन का नाम *नवार* था। मैं ज़माने की बड़ी दौलत लाया हुँ, घर में तेरे साथ इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का सर है, ईमानदार पत्नी ने कहाः तेरे लिए नरक व जहन्नम का गड़ढा है, लोग सोना और चाँदी लाते हैं और तू हज़रत रसूल पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के धन्य नवासे का सर लाया है, अल्लाह की क़स्म! कोई घर तेरे और मेरे सर को कभी जमा ना करे, ये केह कर बिस्तर से उठी और घर के बाहर चली गई, केहती हैः मैं ने देखाः आकाश से उस बड़े बरतन की ओर स्तम्भ (सुतून) के रूम में नूर उतर रहा है, अधिक देखा के सफैद पक्षी उस के अतराफ उड़ रहा है।

(*अल कामिल फित तारीक़, ज़िक्र मक़तलिल हुसैन, पः 178*)

धन्य मज़ार का निरादर करने वाला कई रोग में गिरफ्त

करामतः 12

शहीदों की हयात क़ुरान की आयतों तथा हदीसों से साबित है। शहादत के बाद ये लोग अल्लाह तआला की नज़दीकी के उच्च मंज़िलों पर स्थापित होते हैं तथा उच्च गुणों से संबोधित होते हैं अर्थात उन्हें पूर्व जीवन से अधिक अधिकार व क्षमता प्रदान होते हैं। इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद कई करामतें व अधिकार का प्रकटन हुआ।

इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर में रिवायत व्याख्या की हैः-

भाषांतरः हज़रत जरीर ने हज़रत अमश रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित किया के क़बीले बनी असद का एक व्यक्ति इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य मज़ार पर बोल व बराज़ किया (मअज़अल्लाह) उसी समय उस के घर वाले फाजिल, पागल, जुज़ाम और कई बीमारियों में फंस गए तथा गरीब व दरिद्र हो गए।

(अल मुअजम अल कबीर लित तबरानी, हदीस संख्याः 2791 / तह्ज़ीब उल कमाल)

इस रिवायत को व्याख्या कर के अल्लामा नूरउद्दीन हैसमी फरमाते हैः-

भाषांतरः इस हदीस पाक को रिवायत करने वाले अधिप्रमाणित हैं।

(मजमअ उज़ ज़वाईद, जिल्द 09, पः 197)

इस से मालूम हुआ के अल्लाह् तआला ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य मज़ार का निरादर व असम्मान करने वाले व्यक्ति को और उस के घर वालों को दिमाग़ी और त्वचा की बीमारियों में फंसा दिया तथा निर्धनता व दरिद्रता से दो-चार किया।

धन्य मज़ार से सुगन्ध आने लगी

करामतः 13

इमाम इब्न असाकिर रहमतुल्लाहि अलैह ने तारीक़ दिमश्क़ में रिवायत व्याख्या की है:-

भाषांतरः हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुहाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, उन्हों ने फरमायाः हमें हज़रत हिशाम बिन मुहम्मद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वर्णन किया के जब इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य मज़ार पर पानी बहाया गया तो 40 दिन के बाद सूख गया तथा पाक मज़ार व समाधि का निशान मिट गया, क़बीले बनु असद के एक देहाती साहब आए और एक-एक मिट्टी उठा कर सूंगने लगे, अंत में धन्य मज़ार के पास गिर पड़े तथा रोने लगे, उन्हों ने कहाः मेरे माता-पिता क़ुरबान! आप क्या ही पवित्र व सुगन्धित हैं। औऱ आप के धन्य समाधि की मिट्टी क्या ही सुगन्धित व खूशबुदार है। फिर रो कर ये दोहे कहाः

भाषांतरः लोगों ने विरोधियों से आप का धन्य मज़ार छिपाया, तो मज़ार पाक की मिट्टी की सुगन्ध ने खुद धन्य मज़ार का पता बताया।

(तारीक़ दिमश्क़, *ली अली इब्न अल हसन इब्न असाकर*)

ऊपर वर्णन की गई दोनों रिवायतों से मालूम हुआ के इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की उच्च ज़ात व गुण से शहादत के बाद भी फैज़ प्राप्त किया जाता है।

जो बेअदम हों उन्हें बेअदबी व गुस्ताखी की मज़ा मिलती है और जो आदर व सम्मान करने वाले एवं कृपा के उम्मीदवार हों उन्हें बरकत प्राप्त होती है, तथा मज़ार मुबारक की सुगन्ध पूर्ण वायु को सुगन्धित कर देती है ताकि चाहने वालों को जान की राहत व चैन प्राप्त हो।

इब्न ज़ियाद के लिए आग का अज़ाब

करामतः 14

इमाम तबरानी रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी मुअजम कबीर में व्याख्या किया हैः-

भाषांतरः अब्दुल मलिक ने उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के द्वारपाल से रिवायत किया के जब इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत हुई, मैं उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के पीछे महल में प्रवेश हुआ तो अचानक उस के चेहरे में आग भड़क उठी तो उस ने अपनी आस्तीन को आग बुझाने के लिए चेहरे पर फेरा, फिर मुझ से कहाः क्या तू ने कुछ देखा? मैं ने कहाः हाँ, तो मुझे आदेश दिया के इस घटना को छिपाए रख।

(अल मुअजम अल कबीर लित तबरानी, हदीस संख्याः 2762)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हत्यारे को अनेक तरीक़ों से कठिनाई व समस्याओं में उलझाया गया, आखिरत का अज़ाब तो तय तो है किन्तु दुनिया ही में उन्हें तरह-तरह के अज़ाब दिए गए।

उन्हें मृत्यु तक मुहलत नहीं दी गई बल्कि जीवन का हर पल वे अज़ाब से दो-चार रहे, जैसा के इब्न ज़ियाद की उपर्युक्त वर्णन स्थिति से पता चला है। अचनाक जब आग चेहरे से भड़क उठती तो उत्तरः को कैसी शर्मिन्दगी और ज़िल्लत व रुसवाई मेहसूस होती थी।

ग़ौर किया जाए, अल्लाह तआला ने अहले-बैत किराम के गुस्ताखों का बुरा अंजाम स्पष्ट किया और उन की प्रतिभा व सम्मान एवं इमाम हुसैन की धर्मनिष्ठा व दृढ़ता का चरचा क़ियामत तक के लिए सामान्य कर दिया।

शहादत के समय घास का राख हो जाना

करामतः 15

इमाम बैहखी रहमतुल्लाहि अलैह दलाईल उन नुबुव्वह में व्याख्या करते हैं-

भाषांतरः हज़रत सुफयान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी दादी से वर्णित किया, उन्हों ने कहा के इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के समय मैं ने देखा घास राख बन गई और ये भी देखा के गोश्त आग की तरह बन गया।

(दलाईल उन नुबुव्वह, हदीस संख्याः 2813 / तहज़ीब उत तहज़ीब)

उपर्युक्त वर्णन रिवायतों से पता चलता है के इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत में शरीक हर अत्याचारी के लिए जीवन नरक बन गई थी, वह हैरान एवं आश्चर्यचकित रहते थे के किस समय कैसा अज़ाब प्रकट हो जाए। आग के रूम में जो अनोखापन प्रकट हो रहे थे इन में इशारा था के आखिरत में तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ की आग है।

झलकी के रूप में कुछ हिस्सा बताया जा रहा है। हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के और आप के सेना के ऊँट ज़िबा करने के कारण इन अजीब चीज़ों से अल्लाह तआला की ओर से विपद का प्रदर्शन उद्देश्य है तथा उन्हें बार बार याद दिलाया गया के उन्हों ने कैसे दुष्ट व विनाशक अपराध व पाप के दोषी हैं।

गोश्त खून बन गया

करामतः 16

इमाम इब्न हजर असखलानी रहमतुल्लाहि अलैह तहज़ीब उत तहज़ीब में लिखा हैः-

भाषांतरः हुमैद बिन मुर्रा से वर्णित है, उन्हों ने कहाः शहादत के दिन यज़ीदियों ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सेना से एक ऊँट हासिल कर लिया तथा उस को ज़िबा कर के पकाया तो वह जम हुए खून की प्रकार बन गया फिर वह उसके चबा ना सके।

(तहज़ीब उत तहज़ीब, मन इसमुहु हबिस / दलाईल उन नुबुव्वह, हदीस संख्याः 2814)

घास, राख बन गई और गोश्त आग की प्रकार हो गया, इस के द्वारा अत्याचारों के परिणाम की ओर इशारा है के वे आग की हरारत में पड़े रहेंगे। उन को आग का अज़ाब दिया जाएगा।

धरती खून उगलने लगी

करामतः 17

शहादत के दिन जैसे क़ियामत स्थापित हो गई थी। धरती से खून निकलने लगा तथा आकाश से खून बरस रहा था। दीवारें अत्यन्त सुर्क़ हो गई थी। जैसे खून से रंगी हुई हों, अत्याचार करने वालों पर अल्लाह तआला के अज़ाब का प्रकट हो रहा था।

कुथ रिवायतों में सीरिया देश तथा कुछ में बैतुल मक़दस की धरती खून निकलने का वर्णन है अर्थात इमाम अबु बक्र अहमद बिन हुसैन बैहखी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 458 हिज्री) दलाईल उन नुबुव्वह में हज़रत इब्न शहाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से व्याख्या करते हैः-

भाषांतरः हज़रत सिर्री बिन यहया रहमतुल्लाहि अलैह से वर्णित है, वे हज़रत इब्न शहाब रहमतुल्लाहि अलैह से वर्णित करते हैं, आप ने फरमायाः जब मैं युद्ध के उद्देश्य से दमिश्क़ आया तो मैं अब्दुल मलिक के पास उस उद्देश्य से आया के सलाम करुँ, तो मैं ने उन्हें एक गुंबद में ऊँचे फर्श पर पाया तथा लोग उन की दोनों ओर तार में ठहरे थे। मैं उन्हें सलाम कर के बैठ गया, तो उन्हों ने कहाः अए इब्न शहाब! क्या तुम जानते हो के हज़रत अली बिन अबु तालिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के दिन सवेरे बैतुल मक़दस में क्या घटना पेश हुई? मैं ने कहाः

हाँ! उन्हों ने कहाः तुम मेरे साथ आओ। मैं लोगों के पीछे से उठ कर गुंबद के पीछे आया, उन्हों ने अपने चेहरे को फेरा और मेरी ओर पक्ष कर के पूछा के उस समय क्या हुआ था? हज़रत इब्न शहाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु केहते हैं- मैं ने कहाः बैतुल मक़दस में जहाँ भी पत्थर उठा जाता उस के नीचे खून पाया जाता, रावी केहती हैः उन्हों ने कहा के इस बात को मेरे और तुम्हारे अलावा कोई और जानने वाला बाखी ना रहा, और ये बात तुम से भी कोई सुनने ना पाए। आप फरमाते हैं के उन के देहान्त करने तक मैं ने ये बात किसी से नहीं वर्णन की, और इसी प्रकार आप ने उसी सनद से हज़रत अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत की रिवायत की है।

अधिक इमाम ज़हरी से एक और रिवायत व्याख्या है जिस की सनद इस से भी अधिक मज़बूत है। के ये घटना इमाम हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के समय पेश आया।

(दलाईल उन नुबुव्वह, हदीस संख्याः 2761)

ख़ोरासान, सीरिया और कूफा में खून की बारिश

अल्लामा मुहम्मद बिन यूसुफ सालिही रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 942 हिज्री) ने सुबुल उल हुदा वर रशाद में इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के दिन आकाश से खून की वर्षा होने की रिवायतें अन्क रावियों व अधिप्रमाणित पुस्तकों से वर्णन की है।

अर्थात इमाम अबु नुअम अहमद बिन अब्दुल्लाह अस्फहानी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 430 हिज्री) ने मअरिफत उस सहाबह में, अल्लामा यूसुफ सालिही रहमतुल्लाहि अलैह ने सुबुल उल हुदा वर रशाद, जिल्द 11, पः 79 में, इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर, हदीस संख्याः 2765/2787 में और इमाम हैसमी ने मजमअ उज़ ज़वाईद, जिल्द 09, पः 196 में वर्णन किया है।

भाषांतरः (1)- नुज़रा अज़दिया से वर्णित है, उन्हों ने कहा के इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के दिन आकाश से खून बरसाया, सवेरे हम ने अपनी पेशानियों और अंग को खून से भरा पाया। (2)- अयुब बिन उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने कहाः सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का धन्य सब जब लाया गया तो मैं ने शाही महल के दर व दीवार पर खून बेहते देखा। (3)- हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फरमायाः शहादत के दिन घरों और दीवारों पर खून बरसाया गया, जअफर बिन सुलेमान ने कहा के ये परिस्थिति ख़ोरासान, सीरिया, कूफा में भी थी।

(सुबुल उल हुदा वर रशाद, जिल्द 11, पः 80)

आकाश जमे हुए खून की तरह हो गया

करामतः 19

इमाम अहमद बिन हुसैन बैहखी रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी पुस्तक *दलाईल उन नुबुव्वह* में रिवायत व्याख्या की हैः-

भाषांतरः भाषांतरः हज़रत अली बिन मसहर ने अपनी दादी रिवायत की उन्हों ने कहाः इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में कम उम्र लड़की थी उस समय आसमान कई दिनों तक जमे हुए खून की तरह हो गया था।

(दलाईल उन नुबुव्वह लिल बैहखी, हदीस संख्याः 2812)

अल्लाह तआला के नाराज़गी का प्रदर्शन कई स्थान पर अनेक प्रकार से होता रहा, उन में से एक, आसमान का खऊन के प्रकार हो जाना है, इसी प्रकार आसमान का सुर्क़ होना भी अधिप्रमाणित रिवायतों से साबित है।

मानव पर जब क्रोध तारी होता है तो उस का प्रभाव चेहरे पर सूरत के रूप में सुर्क़ी व लाल प्रकट होता है, अल्लाह तआला शरीर व जिस्मानी से पवित्र है। इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत तथा आप पर किए गए अत्याचार व कठोरता पर आसमान को सुर्क़ (लाल) बना कर अल्लाह तआला ने अपने जलाल का प्रदर्शन किया।

जैसा के हज़रत शहाबउद्दीन इब्न हजर हैसमी रहमतुल्लाहि अलैह ने अस सवाअक़ अल मुहरिक़ा में लिखते हैः-

भाषांतरः इब्न जूज़ी ने कहाः आसमान सुर्क़ (लाल) होने में हिक्मत ये है के जब हमें क्रोध आए तो चेहरे पर लाली का असर व प्रभाव प्रकट होता है तथा अल्लाह तआला शारीरिक से पवित्र है। उस ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के शहादत के घटना पर अपने ग़ज़ब का प्रदर्शन आकाश व आसमान की सुर्क़ी से स्पष्ट किया, ताकि ये मालूम हो जाए के ये कितना संगीन अपराध है।

(अस सवाअक़ अल मुहरिक़ा, पः 116)

आकाश लाल हो गया

करामतः 20

मुअजम तबरानी तथा मजमअ उज़ ज़वाईद में रिवायत हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु बक्र बिन अय्याश ने हज़रत जमील बिन ज़ैद से रिवायत की है, उन्हों ने कहा के जब इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत हुई तो आकाश लाल हो गया, मैं ने कहाः आप क्या केहते हैं? तो हज़रत जमील बिन ज़ैद ने कहाः निश्चय झूठ केहने वाला मुनाफिक़ है, निश्चय आप की शहादत के समय आसमान लाल हुआ।

(अल मुअजम अल कबीर लित तबरानी, हदीस संख्याः 15162)

जिन्नात का दुःख का प्रकटन

इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत पर दुःख का प्रदर्शन व प्रकटन करना उस प्राणियों से भी साबित है जो मनुष्यों की नज़र से ग़ायब औऱ गुप्त हैं अर्थात रिवायतों में आया है के इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत पर जन्नों नें दुःख का प्रकटन किया तथा उन की आवाज़ मनुष्य लोगों ने सुनी,

जैसा के अल्लामा इब्न कसीर (देहान्तः 774 हिज़्री) ने अल बिदायह वन निहायह में लिखा हैः-

भाषांतरः और करबला से संबंधित हज़रत कअब अहबार से कई रिवायतें व्याख्या हैं तथा अबुल जनाब कल्बी आदि ने वर्णन किया के इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत पर करबला वालों ने लगातार जिन्नात के रोने की आवाज़ सुनी र कथन सुना के सैयदना रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आप की पेशानी को चूमा, और आप के धन्य गालों में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की चमक है। इमाम हुसैन के माता-पिता अहले-क़ुरैश के उच्च लोगों से हैं, तथा आप के नाना हज़रत सब से श्रेष्ठतर है।

(अल बिदायह वन निहायह / मअरिफत उस सहाबह, हदीस संख्याः 1686)

उपर्युक्त वर्णन सम्पूर्ण रिवायतों से ये बात प्रकट होती है के इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत का दुःख ना केवल मानव जाति बल्कि हैवानात, जिन्नात, जानवर, पक्षियों एवं पेड़ों को भी रहा तथा करबला का मैदान हो या कोई और स्थान, धरती व आकाश तथा अन्य निर्माण आप के आज्ञाकारी हैं।

ग़ैब से क़लम का प्रकट होना

अल्लामा इब्न कसीर ने एक और स्थान पर इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामत का वर्णन किया है जो निम्नलिखित हैः-

और रिवायत वर्णन की गई के इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जिन लोगों ने शहीद किया वह लौटे था शराब पी कर रात गुज़ार दी, उन के साथ इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का धन्य सर था के अचानक लोहे का एक क़लम प्रकट हुआ और खून से दीवार पर ये लिखाः-

भाषांतरः क्या ये क़ौम इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शहीद कर के क़ियामत के दिन आप के नाना जान की शफाअत की उम्मीद रखती है?

(अल हिदायह वन निहायह)

अल्लामा मुहम्मद बिन यूसुफ सालिही शामी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 942 हिज्री) ने इमाम इब्न असाकिर के हवाले से लिखा हैः-

भाषांतरः एक जमात किसी युद्ध में रूम देश को गई तो वहां एक गिरजाघर में ये दोहे लिखा पाया, पूछने पर मालूम हुआ के नबूवत की घोषणा से 300 वर्ष पूर्व से ये दोहे दीवार पर लिखे हैं।

(सुबुल उल हुदा वर रशाद, जिल्द 11, पः 80)

उपर्युक्त वर्णन करामतें व चमत्कारों से हज़रत इमाम हसन व इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की प्रतिभा व प्रतिष्ठा और अल्लाह तआला के दरबार में इन के खुर्ब व निकटता का पता चलता है।

उल्लिखित करामतें व चमत्कारों को प्रामाणिक मुफस्सिरीन व हदीस के हाफिज़, इतिहासकार लोगों ने अपनी तफसीर व हदीस की अधिप्रमाणित पुस्तकों तथा इतिहास की पुस्तकों में वर्णन किया है। ये वे इसलाम के मुहद्दिसीन और विद्वान लोग हैं जिन की रिवायतों व व्याख्याओं पर इस्लामी ज्ञान के एक बड़े संग्रह का व्युत्पन्न व निर्भर है।

इन घटना से ये बात खुल कर स्पष्ट होती है के इमाम हसन व इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की शहादत किसी मजबूरी के कारण से नहीं हुई।

अल्लाह तआला ने इन्हें अधिकार व इख्तियार प्रदान किया है। निपुण अधिकार रखते हुए उपयोग ना करना, उच्च चरित्र व लोग ही से हो सकता है।

परीक्षण के स्थान में होने के कारण से इमाम हसन व इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अत्याचारों के अत्याचार को अपने अधिकार व इख्तियार से नहीं रोगा। यदि ये लोग चाहते तो शत्रु व विरोधी पल भर में ढ़ेर व नाश हो जाता, धरती उन्हें पकड़ लेती, आकाश क़हर बन कर आग बरसाता, उन के सवारियाँ उन्हें हलाक कर देतीं, हज़रत हसन व हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने केवल कुछ व चंद समय करामतों को प्रकट कर के इस की ओर इशारा कर दिया।

इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के द्वारा उम्मत को क़ुरबानी की विशाल मिसाल व उदाहरण मिला। बेकस व बेबस लोग की ढाढ़स व आश्वासन बन गया, उत्पीड़ित व मज़लूम लोगों को उत्साह व भावनी मिली, पूर्णतया पराजित शक्तियों को पस्पा करने की भावना मिली।

धर्मनिष्ठा व दृढ़ता का प्रवचन मिला, अतः इस्लाम को जीवन मिला, सत्य का आदर्श ऊँच होने लगा औत झूठ व असत्यता को असफलता हो गई।

क़त्ल हुसैन असल में मरगे यज़ीद है

इसलाम ज़िन्दा होता है हर करबला के बाद

अल्लाह तआला हम सब को हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तुफैल हिदायत व मार्गदर्शन पर स्थापित रखे तथा खात्मा कुशलता व सत्यता पर करे तथा इमाम हसन व इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के बरकात से मालामाल करे।

आमीन